IWMP परियोजनांतर्गत जिला राजनांदगांव
विकासखंड मानपुर में लाख उत्पादन के सफलता की कहानी

छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तर पूर्वी भाग में 82^0 08' से 83^0 09' अक्षांश एवं 22^0 01' से 23^0 01' देशांतर पर जिला राजनांदगांव स्थित है। विकासखण्ड मानपुर जो नक्सल प्रभावित क्षेत्र है, राजनांदगांव जिले के मुख्यालय से 100 कि.मी. की दूरी पर स्थित ह। यहां पर IWMP परियोजनांतर्गत प्रथम बैच (2009–10) की दो परियोजनाएं संचालित हैं। जिसके अंतर्गत 16 गांव शामिल हैं। परियोजना क्षेत्र का अधिकांश भाग सघन वनों से अच्छादित है एवं कुल जनसंख्या की 85% आबादी अनुसूचित जनजाति की है। यहां निवासरत प्रमुख जनजाति गोढ़, कंवर, हल्बा और बैगा है। सीमांत व छोटे किसानों की संख्या कुल आबादी का 80% से ज्यादा है एवं वर्षा सिंचित क्षेत्र कुल कृषि क्षेत्र का 90% से ज्यादा है, जिसके कारण किसान केवल एक फसल ले पाते थे। यहां मजदूरी दर भी न्यूनतम है।

अतिगरीब एवं पिछड़ा क्षेत्र होने के साथ–साथ नक्सलवाद से ग्रस्त होने के कारण शुरूआती दिनों में परियोजना का क्रियान्वयन करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा था फिर भी रणनीतियां तैयार कर परियोजना के क्रियान्वयन हेतु उचित कदम उठाया गया जिससे लोगों को लाख उत्पादन हेतु प्रोत्साहित करने में सफलता प्राप्त हुई।

परियोजना क्षेत्र का अधिकांश भाग सघन वनों से ढंका हुआ है जिसमें मिश्रित प्रजाति के पेड़ पाए जाते हैं। जिले के अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा इन क्षेत्रों में कुसुम और पलाश के वृक्ष अधिकांश मात्रा में पाए जाते हैं जो लाख उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण स्रोत है। इन क्षेत्रों में पूर्व से ही परंपरागत तरीके से लाख की खेती का कार्य स्थानीय किसानों द्वारा किया जाता रहा है। जिससे अतिरिक्त आय की प्राप्ति होती है। परंतु अच्छे बाजार की अनुपलब्धता एवं परंपरागत तरीके से लाख उत्पादन के कारण किसान उचित लाभ अर्जित नहीं कर पाते थे।

IWMP परियोजना यहां के स्थानीय लोगो के लिए वरदान साबित हुआ। जिससे न सिर्फ मृदा एवं जल संरक्षण के कार्य किये गये, परंतु स्थानीय आदिवासी लोगों के लिए बेहतर आजीविका के साधन निर्मित करने में सफल रहे। आजीविका गतिविधि अंतर्गत लाख उत्पादन के कार्य को चयनित कर वैज्ञानिक तरीके से खेती करने को बढ़ावा दिया गया जिससे किसानों को अतिरिक्त आय अर्जित करने में मद्द मिली।

परियोजना का प्रमुख उद्देश्य लाख उत्पादन द्वारा गरीब आदिवासियों का कौशल उन्नययन, क्षमता विकास, बेहतर बाजार की सुविधा उपलब्ध करवाना एवं उनके परिवारों का सर्वांगीण विकास करना था। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मौहल्ले/टोलावार बारंबार सभाओं का आयोजन किया गया। गांव के प्रभावशाली व्यक्तियों का चयन किया गया। जिन्होनें लोगों को लाख उत्पादन के प्रति जागरूक एवं प्रोत्साहित करने का कार्य किया। IWMP के कार्यकर्ताओं द्वारा कुसुम के वृक्षों का सर्वे किया गया, जिससे यह पता चला कि प्रत्येक परिवार के पास औसतम चार से पांच कुसुम के वृक्ष है। ग्राम सभा

आयोजित कर मानपुर विकास खण्ड के 13 ग्रामों से (कनेली, कंदेपाट, मेंदा, कोराचा, कोन्डाल, खेदीगांव, गटेगहन, तेरेगांव, उच्चापुर, संबंलपुर, पुगदा एवं जामड़ी) 212 हितग्राहियों का चयन किया गया। लाख उत्पादन हेतु 212 हितग्राहियों का प्रस्ताव जलग्रहण समिति के समक्ष रखा गया, जो उनके द्वारा अनुमोदित किया गया।

सर्वप्रथम चयनित हितग्राहियों को वैज्ञानिक विधि से हो रहे लाख पालन के क्षेत्र में विशेष भ्रमण कराया गया। जिसमें उन्हे जिला कांकेर के विकासखण्ड चारामा अंतर्गत ग्राम तिरकादंड ले जाया गया। जहां मुख्यमंत्री के हाथों लाख पालन के लिए उत्कृष्ठ कृषक का सम्मान प्राप्त करने वाले मास्टर ट्रेनर श्री पुरूषोत्तम मंडावी के द्वारा गहन प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इनके द्वारा कुसुम वृक्ष की कटायी–छटायी के तरीके, बिहन लाख के चढ़ाने, फूकी उतारने एवं फसल की कीड़ों से बचाव के वैज्ञानिक तरीको को प्रभावी तरीके से बताया गया। जिससे हितग्राहियों को वैज्ञानिक पव्द्धति से लाख उत्पादन करने के प्रति आत्मविश्वास बढ़ा। प्रशिक्षण उपरांत परियोजनांतर्गत उत्पादन एवं लघु उद्यम मद अंतर्गत जलग्रहण समिति द्वारा प्रत्येक हितग्राही को रू. 3000/- की राशि प्रदान की गयी। प्रारंभ में बिहन लाख 300 से 450 प्रति किलोग्राम की दर से वन विभाग एवं लाख के बडे व्यापारियों से लिया गया। तत्पश्चात अगले फसल के लिए हितग्राहियों द्वारा अपने आवश्यकता अनुसार स्वयं के उत्पादन से बिहन लाख लिया गया।

लाख पालन अंतर्गत प्रशिक्षण में शामिल प्रशिक्षणार्थियों का विवरण

क.	परियोजना का नाम	प्रशिक्षित प्रतिभागियों की संख्या	पुरूष	महिला	जाति		
					अजा	अजजा	अपिव
1.	IWMP-01 माटेकसा नाला, मानपुर	70	70	0	10	60	0
2	IWMP-03 राजघाट कोंडाल नाला, मानपुर	99	84	15	11	75	13
	Total	169	154	15	21	135	13

212 हितग्राहियों को कुल रू.6,31,800/- प्रदान किया गया। जिसके विरूद्ध एक फसल में रू.11,44,600/- का लाभ अर्जित किया गया है।

- माह जनवरी एवं फरवरी 2012 में कुसुम वृक्षों की कटायी–छटायी की गयी।
- माह जनवरी एवं फरवरी 2013 में बिहन लाख को कुसुम के वृक्षों पर चढ़ाया गया।
- 21 दिनों बाद फूकी लाख को उतारा गया।
- तीस दिनों के उपरांत कीटनाशक (निकोल एवं नियोन) का छिड़काव किया गया।
- 45 से 60 दिन बाद कीटनाशक का दूसरी बार छिड़काव किया गया।
- माह जून एवं जुलाई 2013 में फसल की कटाई की गयी।

उत्पादन एवं लघु उद्यम मद अंतर्गत हितग्राहियों को प्रदाय राशि का विवरण

क्रं.	परियोजना का नाम	हितग्राही	जाति			कुसुम वृक्ष की संख्या	बिहन लाख किग्रा	प्रदाय राशि	प्राप्त लाभान्वित राशि
			अजजा	अजा	अपिव				
1.	IWMP-01 माटेकसा नाला, मानपुर	86	84	0	2	288	324	255000	417700
2	IWMP-03 राजघाट कोंडाल नाला, मानपुर	126	116	3	7	430	683	376800	726900
Total		**212**	**200**	**3**	**9**	**718**	**1017**	**631800**	**1144600**

यह पहली बार था कि किसानों को लाख उत्पादन के क्षेत्र में प्रशिक्षण एवं क्षेत्र भ्रमण कराया गया। जिसका परिणाम अच्छा रहा। लाख उत्पादन की सफलता ने किसानों के मन में उत्साह एवं इस गतिविधि के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न किया।

212 किसानों की सफलता ने क्षेत्र के अन्य लोगों को भी प्रोत्साहित किया। उनके द्वारा तकनीकि प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु इच्छा जाहिर की गयी। क्षेत्र के लोगो का प्रोत्साहन एवं उत्साह देख जिला पंचायत ने मास्टर ट्रेनर के प्रशिक्षण हेतु Indian Institute of Natural Resins & Gums, रांची, झारखण्ड भेजने की योजना बनायी है।

सिर्फ लाख उत्पादन में वृद्धि होना ही पर्याप्त नहीं था, परंतु उत्पाद का अच्छा मूल्य मिलना भी अति महत्वपूर्ण था। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जिला पंचायत राजनांदगांव द्वारा चौकी विकासखण्ड के ग्राम केकतीटोला में आईएपी मद से लाख प्रसंस्करण केन्द्र की स्थापना की गयी है। जिसका प्रतिदिन क्षमता 10 टन है। इसकी स्थापना से लाख उत्पादन के कार्य को बढ़ावा मिलने के साथ–साथ उसके स्थानीय बाजार व्यवस्था को भी संरक्षण प्राप्त होगा एवं बिचौलियों के शोषण से मुक्त होकर किसानों को अपने उत्पाद का सीधा लाभ प्राप्त होगा।

अतः लाख पालन को बढ़ावा देने के लिए अन्य विभागों जैसे वन विभाग, कृषि विभाग तथा अन्य योजनाओं जैसे–बीआरजीएफ, आईएपी, एमजीएनआईजीए एवं एनआरएलएम द्वारा अभिसरण के माध्यम से प्रशिक्षण, पौधरोपण, प्रोसेसिंग यूनिट लगाने जैसे कार्य को भी आगामी कार्य योजना में शामिल किया गया है।

लाख उत्पादन की प्रमुख चुनौतियां

1. घने जंगल एवं बामपंथ उग्रवाद से प्रभावित होने के कारण परियोजना क्षेत्र तक पहुंचना कठिन है।
2. स्थानीय लोगो से संबंध स्थापित करनाः– परियोजना क्षेत्र में अधिकांश आबादी आदिवासियों की है। जिनकी प्रमुख बोली गोंडी है। जिसके कारण लोगों के साथ संबंध स्थापित करने में बहुत कठिनाई होती है। इस समस्या पर काबू पाने के लिए IWMP परियोजना के कार्यकर्ताओं द्वारा बार–बार परियोजना क्षेत्र का दौरा कर ग्राम स्तर पर बैठक आयोजित किया गया एवं प्रभावशाली व्यक्ति का

चयन किया गया। इस तरह की रणनीति के कारण वहां के लोगो से संबंध स्थापित करने में सहायता मिली। इसके अतिरिक्त सरपंच, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, मितानिन, स्व सहायता समूहों एवं स्थानीय शिक्षकों ने भी सराहनीय सहयोग प्रदान किया।

3. आदिवासियों को नयी तकनीकि अपनाने के लिए प्रोत्साहित करनाः– किसान लाख उत्पादन की परंपरागत खेती करने में बहत सहज थे। जो कि उनके अनुसार आसान, कम लागत वाली एवं कम समय लेने वाली थी। इन कारणों की वजह से नयी तकनीकि अपनाने के लिए वे तैयार नहीं थे। इस समस्या पर काबू पाने हेतु कांकेर जिले के चारामा विकासखंड में प्रशिक्षण एवं क्षेत्र भ्रमण का आयोजन किया गया। वहां उन्हे श्री पुरूषोत्तम मंडावी द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। जिन्होंने लाख उत्पादन में सराहनी कार्य किया है। उन्हे आई.एल. आर.आई., रांची, झारखण्ड द्वारा 2007 में सर्वश्रेष्ठ लाख उत्पादन करने वाले किसान का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। उनके द्वारा नयी तकनीकि से लाख उत्पादन की विभिन्न प्रक्रियाओं का प्रर्दशन किया गया। इस प्रशिक्षण एवं क्षेत्र भ्रमण से प्रतिभागियों के भीतर वांछित बदलाव लाने में सफलता प्राप्त हुई।

Focussed Group Discussion, PRA and Training held on Village for Lac Production

Training held on Village for Lac Production

Lac Production done on Village

Lac Production done on Village

वामपंथ उग्रवाद से प्रभावित एवं वनों से आक्षादित इस पहुंचविहीन परियोजना क्षेत्र में **IWMP** परियोजनांतर्गत किये गये कार्यो को भारत सरकार द्वारा उत्कृष्ठ श्रेणी का कार्य मानते हुए राष्ट्रीय पुरस्कार से दिनांक 19.02.2015 को नई दिल्ली में पुरस्कृत किया गया। राज्य शासन की तरफ से श्री पी.सी. मिश्रा, सचिव, छ.ग. शासन, पंचायत एवं ग्रामीण विकास द्वारा पुरस्कार ग्रहण किया गया।